Online at: https://researchtrendsjournal.com **ISSN No:** 2584-282X

INTERNATIONAL JOURNAL OF TRENDS IN EMERGING RESEARCH AND DEVELOPMENT

Volume 1; Issue 1; 2023; Page No. 357-359

Received: 17-10-2023
Accepted: 29-12-2023

दर्शन मितवा के उपन्यासों का भाषा वैशिष्ट्य

डॉ. यशवीर दहिया

सहायक प्राध्यापक, हिन्दी, के.पी.एस. कॉलेज, रतनगढ़, चूरू, राजस्थान, भारत

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.15051822

Corresponding Author: डॉ. यशवीर दहिया

सारांश
दर्शन मिलवा के उपन्यासों की भाषा, सरल, प्रवाहमयी और संवेदनशील है, उन्हें किसी एक भाषा विशेष में बंधना स्वीकार नहीं है। वे बोलचाल की भाषा का प्रयोग करते हैं, जिससे पात्र और संवाद सस्ती वास्तविक प्रतीत होते हैं। उनकी भाषा में संजीव वर्णन, भावात्मक गहराई, काव्यात्मक सौन्दर्य और समाज क्या यथार्थ प्रतिबिम्ब होता है। संवाद प्रधानता, रूपकों व प्रतीकों का प्रयोग भी उनकी भाषा को प्रभावशाली बनाता है। इस प्रकार उनकी भाषा पाठकों को कथानक से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

मुख्य शब्दः दर्शन, मितवा, उपन्यासों, भाषा वैशिष्ट्य, प्रवाहमयी और संवेदनशील

प्रस्तावना
साहित्य समाज का दर्पण होता है और उपन्यास इसकी सबसे प्रभावशाली विधाओं में से एक है। उपन्यास न केवल मनोरंजन का साधन होते हैं बल्कि, वे समाज, संस्कृति और मानवीय संवेदनाओं को भी व्यक्त करते हैं। मितवा जी एक जनवादी सामाजिक उपन्यासकार हैं। उनके उपन्यासों में जिस भाषा का प्रयोग हुआ है, वह वर्तमान युग के पाठक के करीब है। इसलिए भाषा की दृष्टि से उनके उपन्यास काफी प्रसिद्ध हुए हैं। इस अध्ययन में दर्शन मितवा के उपन्यासों की भाषा विशेषताओं का विशलेषण किया जाएगा, जिससे उनके लेखन की विशिष्टता को समझा जा सकता है।

भाषा में सरलता एवं रोचकता का समावेश
''दर्शन मितवा के उपन्यासों की सबसे प्रमुख विशेषताओं में सरलता एवं रोचकता शामिल है। उनकी भाषा सहज और प्रवाहमयी है, जिससे पाठकों को कथानक समझने में कोई कठिनाई नहीं होती। वे कठिन शब्दावली या जटिल वाक्य संरचना के बजाय सरल, स्पष्ट और आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग करते हैं। साथ ही उनकी लेखन शैली में रोचकता का विशेष ध्यान रखा गया है। उनके संवाद प्रभावशाली और जीवन से जुड़े होते है जिससे कहानी में स्वाभाविकता बनी रहती है। वे वर्णनात्मक शैली और संवादों के माध्यम से कथा को इस तरह प्रस्तुत करते हैं कि पाठकों की जिज्ञासा बनी रहे और वे कहानी में रूचि बनाए रखें।
"चौपाल के आगे जोगे वालों की तिमंजली हवेली थी। हवेली के आगे पड़े बड़े से तख्त पर भी मुख्तयार नाई के पास बैठे कई आदमी आपस में हंस रहे थे। वह उन्हें मसालेदार चटपटी बातें सुना रहा था। काकी वहाँ से मुंह फेर कर तेजी से गुजर गई। इसके आगे कपूर ब्राह्मण का घर था। फिर उन्हीं का खाली पड़ा गलियारा और उससे गाँव का चौक हो– चौराहा। बाईं ओर को जाने वाली गली को श्हमीर साब वाली गलीय कहते थे।''[1]

व्यंग्य का समावेश
भाषा में व्यंग्य केवल हास्य उत्पन्न करने के लिए नहीं, बल्कि समाज की विडम्बनाओं, कुरीतियों मानवीय कमजोरियों को उजागर करने के लिए प्रयुक्त होता है। वे समाज में व्याप्त अंधविश्वास, रुढ़ियों और पाखंड पर तीखा प्रहार करते हैं जिससे पाठकों को सोचने पर मजबूर कर देते हैं।
"जिस जन्मजात साधु को मेरू अभी तक एक महापुरुष समझती आ रही थी उसकी बातें सुनकर उसे उस पर क्रोध आया और वह ऊंचे स्वर में बोली, इन्द्रियों को इस तरह वश में करना मूर्खता है। तुमने तो मन को मार लिया है मन को मार लेना खुद की हत्या करना है। तन से तो तुम अधूरे थे ही, तुम मन से भी अधूरे हो, अपूर्ण।"[2]
उनके उपन्यासों में कभी कभी राजनीति और प्रशासनिक तंत्र की विसंगतियों पर कटाक्ष देखने को मिलता है। इस प्रकार दर्शन

मितवा के उपन्यासों में व्यंग्य का प्रयोग न केवल कथा को रोचक बनाता है बल्कि सामाजिक यथार्थ की भी गहराई से प्रस्तुत करता है।

वर्णन विचित्रता का समावेश

लेखक की लेखनी में वर्णन केवल घटनाओं का चित्रण मात्र नहीं होता, बल्कि उसमें कल्पना शीलता, संवेदनशीलता और मनोवैज्ञानिक गहराई का समावेश रहता है। उपन्यासों में प्रकृति, चरित्रों और परिस्थितियों का ऐसा सजीव चित्रण मिलता है कि, पाठक अपने सामने पूरी घटना को अनुभव कर सकते हैं।

"करीब एक वर्ष गुजरा होगा। कान्ता के मन की मुराद पूरी हो गई थी। पत्थरों न्यो फाड़कर साक्षात परमात्मा जैसे उनके सामने प्रकट हो गया था। कान्ता ने एक खूबसूरत बेटे को जन्म दिया था। वह खुश भी, जैसे उसकी बेरस और नीरस जिन्दगी में ममता का एक रस घुल गया था। जिन्दगी के अर्थ ही बदल गए थे।"[3]

वे वर्णन को प्रभावशाली बनाने के लिए लोकप्रचलित शब्दों, कहावतों और मुहावरों का प्रयोग करते हैं। दर्शन मितवा के उपन्यासों में वर्णन विचित्रता कथानक को जीवंत बनाती है और पाठकों को एक अनूठा साहित्यिक अनुभव प्रदान करती है।

परिस्थितियों के अनुसार भाषा का प्रयोग

दर्शन मितवा के उपन्यासों की भाषा स्थिर न होकर कथा की परिस्थिति पात्रों की मानसिक स्थिति और प्रसंग के अनुरूप बदलती रहती है। इससे उनका लेखन अधिक स्वाभाविक और प्रभावशाली बन जाता है। कथा में जब कोई भावात्मक प्रसंग आता है, जैसे प्रेम, पीड़ा, त्याग या करुणा, तब उनकी भाषा कोमल, संवेदनशील और काव्यात्मक हो जाती है।

'एक रात का जख्म' उपन्यास में जब काकी घुमंडी के घर से निकलकर जाती है और निक्का आता है, तो काकी के प्यार की कशिश को घुमंडी निक्के से छिपा नहीं पाता निक्के को भी काकी और घुमंडी के रिश्तों का आभास है। उनके मध्य हुई बातचीत में लेखक ने परिस्थितियों के अनुरूप भाषा का प्रयोग किया है–

"शरम तो नहीं आती बीड़ी पिलाते हुए, बातें देख करता ससुरा। साला बीड़ी का।

और तो अंग्रेजी न लाकर दे दूँ तुझे!

अच्छा! अभी भी नहीं लाएगा, जट्टी तो देख, कैसी कबूतरी जैसी फंसाई है, धर्म से।

अबे, कौन–सी जट्टी?"[4]

जब उपन्यास में हास्य था व्यंग्य की स्थिति होती है, तब वे चुटिले संवादों, सरल वाक्य संरचना और लोक प्रचलित कहावतों का उपयोग करते हैं, जिससे पाठकों को रोचकता और मनोरंजन का अनुभव होता है।

प्रसंगानुकूल भाषा प्रयोग

लेखक ने घटनाओं, प्राकृतिक दृश्यों और स्थानों के विवरण में वे बेहद चित्रात्मक भाषा का प्रयोग करते हैं जिससे पाठक के सामने दृश्य जीवंत हो जाते हैं। उपन्यासों में पात्रों की पृष्टभूमि के अनुसार भाषा का प्रयोग किया ह। ग्रामीण पात्रों के संवादों में स्थानीय बोलियों का प्रभाव होता है। जबकि शिक्षित वर्ग के पात्रों की अधिक परिष्कृत होती है। समाज में अनेक घटनाएं घटती रहती हैं। विवाह, जन्मोत्सव, मृत्यु इत्यादि अनेक प्रसंग समाज से जुड़े हैं। इन विशेष दिनों में पात्रों के मध्य होने वाली बातचीत भी विशेष होती है। किसी की मृत्यु पर इक्टठे हुए लोग ज्यादातर चुप रहते हैं और बातें करते हैं तो मरने वाले के संदर्भ में या किसी अन्य व्यक्ति जो मर चुका है। 'उस मोड़ से गुजरते हुए', उपन्यास में जेठ की मृत्यु पर आए लोगों की वार्तालाप इस प्रकार है –

"ऐसी उम्र में तो परमात्मा वैसे ही उठा से प्राणी को। क्या हाल था बेचारे का। घर से प्राणी जाता है दुरूख तो खैर होता ही है, पर जीवित रहते इसका इससे भी ज्यादा दुख था। घरवालों का देख–देख मन तड़पता रहता है। टांगें जुड़ गई थी, उठ–बैठ नहीं सकता था, पर शाबास भाई बसु के, जिसने बाप की इतनी सेवा की।"[5]

पात्रानुसार सजीव भाषा प्रयोग

दर्शन मितवा ने अपने उपन्यासों में पात्रानुसार भाषा का प्रयोग किया है। 'मौन रात की चिता' का लीलू एक अनपढ़, गंवार और नौकर वर्ग का पात्र है। उससे हम परिमार्जित और सभ्य भाषा का प्रयोग की उम्मीद नहीं कर सकते। भाषा चयन करते समय लेखक ने नौकर और मजदूर वर्ग में प्रयोग होने वाली शब्दावली पर ध्यान दिया है।

"मुझसे से साले कुत्ते भी अच्छे होंगे। यह भी साली कोई जिन्दगी है। अगर किसी काम में थोड़ी देर हो जाए, तो आसमान सिर पर उठा लेगे। इसके बदले मुझे क्या दिया है? ये दूरे जूते। चूतड़ों में ले लेकर बाती बनाकर दो साल हो गए।

इन्हें घसीटते हुए, तब भी बिल्कुल घिसाकर दिए थे। फिर मैं क्यों यूं ही मुफ्त में खाल खिंचवाता रहूं ? पी गया मेरा लहु। बदन पर चमड़ी भी नहीं छोड़ी कंजर ने।"[6]

इन्होंने पात्र किसी वर्ग विशेष के न लेकर सभी वर्गों के पात्रों की भाषा का प्रयोग किया है।

तत्सम–तद्भव शब्दावली का प्रयोग

शिक्षित वर्ग अपनी भाषा में खड़ी बोली या तद्भव, तत्सम रूप और अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग भी करता है। दर्शन मितबा की भाषा का झुकाव तत्सम शब्दावली की ओर इस प्रकार देखा जा सकता है–

"बेटी मेरू के बारे में आपका क्या विचार है? उसने मुस्कराते हुए बात आगे बढ़ाई, क्या उसे अभी और अपने आश्रम की शोभा बनाए रखना चाहते हैं, मैं सोचता हूँ, अब उसका हमारे आश्रम की शोभा बढ़ाने का समय आ गया है और हमें अब और देर नहीं करनी चाहिए।"[7]

चित्रात्मक अभिव्यक्ति का प्रयोग

चित्रात्मक अभिव्यक्ति उनके उपन्यासों को सिर्फ पठनीय नहीं, बल्कि अनुभव करने योग्य बना देती है। उनके शब्द पाठकों के मन में दृश्य, ध्वनि, गंध और भावनाओं का ऐसा संसार रचते हैं, जिससे उनकी रचनाएं लंबे समय तक याद रहती हैं। चित्रात्मकता से वातावरण का वर्णन और अधिक प्रभावशाली एवं स्थायी हो जाता है। 'उस मोड़ से गुजरते हुए' उपन्यास में जब त्रिलोकी बीमार बंसु का पता करने आता है, तो कांता का वर्णन करने के लिए लेखक ने चित्रमय भाषा का प्रयोग किया है–

"कान्ता अकेली ही नल के पास पीढ़ी पर बैठी अपने पांव पानी से भरे हुए तसले में रखे, हाथ–मुँह धो रही थी। बाहों को उसने मल–मल कर धोया था। अपने पावों को झावे से खुरच खुरच कर लाल कर रखा था। अपनी सलवार उसने घुटनों तक उठाई हुई थी। उसकी पिंडलियां गोरी गोरी चमक रही थी।"[8]

लेखक ने पात्रों की भाव–भंगिमाओं का अंकन करने के लिए भी चित्रात्मकता का प्रयोग किया है। चित्रात्मकता एक और व्यक्ति से सम्बद्ध होती है, वहीं दूसरी और भावनाओं क्रियाकलापों से सम्बद्ध होती है।

निष्कर्ष

दर्शन मितवा के उपन्यासों में प्रसंगानुकूल भाषा, पात्रानुसार

सजीव अभिव्यक्ति और चित्रात्मक वर्णन उनकी लेखन शैली को विशिष्ट बनाती है। वे भाषा का प्रयोग केवल संवादों और वर्णनों तक सीमित नहीं रखते, बल्कि उसे एक ऐसा माध्यम बना देते हैं, जिससे पाठक भावनाएं महसूस कर सके, दृश्य अपनी आँखों के सामने देख सके और पात्रों के मनोभावों को समझ सके।

संदर्भ

1. सच्चिदानंद – दर्शन मितवा, पृष्ठ–11
2. सच्चिदानंद – दर्शन मितवा, पृष्ठ–71
3. उस मोड़ से गुजरते हुए – दर्शन मितवा, पृष्ठ–187
4. एक रात का जख्म – दर्शन मितवा, पृष्ठ – 49
5. उस मोड़ से गुजरते हुए – दर्शन मितवा, पृष्ठ–63
6. मौन रात की चिता – दर्शन मितवा, पृष्ठ – 12 और 13
7. सच्चिदानंद – दर्शन मितवा, पृष्ठ 16
8. उस मोड़ से गुजरते हुए–दर्शन मितवा, पृष्ठ – 126

Creative Commons (CC) License
This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.